सोमवार
03 अगस्त 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 191
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94 email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता/बीएलओ का शव मिलने से सनसनी

❑पति ने एसआईआर कार्य के दबाव को बताया वजह

हमारे संवाददाता

बागेश्वर। कांडा थाना क्षेत्र स्थित बांसतोली गांव में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) कमला देवी का शव पेड़ से लटका मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। फिलहाल पुलिस प्रथम दृष्टया मामले को आत्महत्या मानते हुए सभी पहलुओं से जांच कर रही है।

जानकारी के अनुसार रविवार सुबह कमला देवी रोज की तरह उठीं और पति पूरन राम के साथ चाय पी। इसके बाद उनके पति गोशाला में गाय का दूध निकालने चले गए। जब वह लौटे तो कमला देवी घर में नहीं थीं। तलाश करने पर उनका शव घर के समीप खेत में एक पेड़ से लटका मिला।

घटना की सूचना मिलते ही कांडा पुलिस मौके पर पहुंची। कांडा थानाध्यक्ष बलवंत कंबोज ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत होता है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल किसी भी पक्ष की ओर से तहरीर नहीं दी गई है। मृतका के पति पूरन राम का आरोप है कि विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत बीएलओ के रूप में मिल रहे कार्यभार और अधिकारियों के लगातार फोन कॉल के कारण उनकी पत्नी मानसिक तनाव में थीं। उनका कहना है कि कमला देवी को मतदाता सूची से जुड़े 88 नोटिस वितरित करने थे, जिनमें से कुछ नोटिस शेष रहने को लेकर वह लगातार चिंतित थीं। लोगों की नाराजगी और काम का दबाव भी उन्हें परेशान कर रहा था।

पति का दावा है कि यही मानसिक तनाव इस दुखद घटना की वजह बन सकता है।

वहीं, कपकोट विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी अनिल चन्याल ने पति के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि कमला देवी ने बीएलओ के रूप में हमेशा सराहनीय कार्य किया। उन्होंने कभी भी किसी प्रकार के दबाव या तनाव की शिकायत नहीं की। अधिकारी के अनुसार, कमला देवी ने उन्हें सौंपे गए सभी 88 नोटिसों के वितरण का कार्य पूरा कर लिया था। यदि किसी प्रकार की समस्या होती तो वह उच्च अधिकारियों को अवगत करा सकती थीं।

कैमरे चालू, ट्रक मुस्तैद और तमाशा

◆अतिक्रमण हटाओ अभियान सहूलियत या सिर्फ कैमरों वाला छलावा

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। देहरादून में फिर अतिक्रमण हटाओ अभियान चल रहा है। फुटपाथ खाली कराए जा रहे हैं। दुकानों के बाहर रखा सामान ट्रकों में भरा जा रहा है। नगर निगम के अधिकारी कैमरों के सामने खड़े होकर बता रहे हैं कि शहर को अतिक्रमण मुक्त बनाया जा रहा है। कुछ दिन तक सड़कें चौड़ी दिखाई देंगी। लोग कहेंगे, वाह, अब ट्रैफिक सुधर जाएगा। लेकिन जरा ठहरिए...एक महीना बाद उसी सड़क से गुजरिए। वही फुटपाथ फिर सामान से भर जाएंगे। वही ठेले, वही बोर्ड, वही टीन शेड, वही पार्किंग और वही कब्जा। फिर अगले साल यही अभियान चलेगा। फिर वही तस्वीरें, वही प्रेस विज्ञप्ति और वही दावा अतिक्रमण हटा दिया गया। सवाल यह नहीं

है कि अतिक्रमण हटाया गया या नहीं। सवाल यह है कि अतिक्रमण हटता क्यों नहीं, सिर्फ हटाया क्यों जाता है? यानी बीमारी का इलाज नहीं, केवल बुखार नापने की रस्म निभाई जा रही है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या फुटपाथ पर बैठा छोटा दुकानदार?क्या फल बेचने वाला गरीब? क्या ठेले वाला? या फिर वह पूरा तंत्र जो सालों तक अवैध कब्जे को बढ़ने देता है और फिर अचानक बुलडोजर लेकर पहुंच जाता है? अगर किसी दुकान ने दो-दो, तीन-तीन फुट तक सरकारी जमीन घेर ली, तो यह एक दिन में नहीं हुआ होगा। यह महीनों और वर्षों में हुआ होगा। तब नगर निगम कहां था? तब नोटिस क्यों नहीं दिए गए?तब कार्रवाई क्यों नहीं हुई?और अगर कार्रवाई हुई थी तो फिर कब्जा दोबारा कैसे हो गया?

अब देहरादून में अतिक्रमण हटाओ अभियान भी एक सरकारी मौसम बन चुका हैजैसे बरसात आती है। जैसे सर्दियां आती हैं। वैसे ही बुलडोजर भी आता है। मीडिया कवरेज होती है। कुछ तस्वीरें वायरल होती हैं। कुछ अधिकारी सम्मानित हो जाते हैं। फिर सब कुछ सामान्य हो जाता है। अगर अभियान के बाद दोबारा कब्जा हो जाता है, तो इसका मतलब साफ है कि कार्रवाई अधूरी थी। यही सबसे बड़ा सवाल है। जब फुटपाथ पर ठेला लगता है, तो बुलडोजर तुरंत पहुंच जाता है। लेकिन जब किसी बड़े होटल का पार्किंग क्षेत्र सड़क तक फैल जाता है...जब किसी बड़े शोरूम की सीढ़ियां सरकारी जमीन पर बन जाती हैं..जब किसी प्रभावशाली व्यक्ति की बाउंड्री वाल आगे बढ़ जाती है...तब कार्रवाई की गति धीमी क्यों पड़ जाती है? कानून की आंख पर पट्टी इसलिए बांधी गई थी कि वह सबको बराबर देखे। लेकिन कई बार लगता है कि उस पट्टी के नीचे से पहचान भी झांक रही है।

यह यक्ष प्रश्न है कि फुटपाथ दुकानों के विस्तार के लिए नहीं बने।फुटपाथ पैदल चलने वालों के लिए बने हैंलेकिन देहरादून में कई जगह पैदल चलना ही सबसे मुश्किल काम है।

दून वैली मेल

संपादकीय

नशे में डूबती युवा पीढ़ी

देश का भविष्य अगर युवाओं के कंधों पर टिका है, तो यह भी सच है कि आज वही युवा धीरे-धीरे नशे की गिरफ्त में फंसता जा रहा है। कभी शराब और तंबाकू तक सीमित रहने वाला नशा अब सिंथेटिक ड्रग्स, स्मैक, चरस, गांजा, एमडी और नशीली गोलियों के रूप में स्कूलों, कॉलेजों और छोटे कस्बों तक पहुंच चुका है। यह केवल कानून-व्यवस्था का विषय नहीं रहा, बल्कि समाज, परिवार और सरकार तीनों की सामूहिक विफलता का आईना बन चुका है। उत्तराखंड जैसे शांत और सांस्कृतिक राज्य में भी नशे का फैलता जाल गंभीर चिंता का विषय है। देवभूमि की पहचान जहां आध्यात्मिकता, प्रकृति और संस्कारों से होती थी, वहीं अब कई जिलों में युवाओं के नशे की गिरफ्त में आने की खबरें लगातार सामने आ रही हैं। सवाल यह है कि आखिर यह जहर युवाओं तक पहुंच कैसे रहा है? यदि पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है, तो तस्करी की यह श्रृंखला टूट क्यों नहीं रही? नशा बेचने वाले केवल अपराधी नहीं हैं, वे आने वाली पीढ़ी के भविष्य के हत्यारे हैं। लेकिन इससे भी बड़ा प्रश्न उन तंत्रों पर है जिनकी जिम्मेदारी इस कारोबार को रोकने की है। जब किसी क्षेत्र में बार-बार नशे की खेप पकड़ी जाती है, तो इसका अर्थ है कि कहीं न कहीं निगरानी और खुफिया तंत्र कमजोर है। छोटी-छोटी मछलियां पकड़ लेने से समस्या खत्म नहीं होगी। जरूरत उन बड़े नेटवर्क तक पहुंचने की है जो करोड़ों रुपये के इस अवैध कारोबार को संचालित कर रहे हैं। दूसरी ओर, केवल पुलिस कार्रवाई से भी समाधान नहीं निकलेगा। आज का युवा बेरोजगारी, प्रतिस्पर्धा, मानसिक तनाव, सोशल मीडिया की आभासी दुनिया और पारिवारिक संवाद की कमी से जूझ रहा है। जब जीवन में उद्देश्य धुंधला पड़ता है, तब नशा एक झूठा सहारा बन जाता है। इसलिए नशे के खिलाफ लड़ाई केवल थानों से नहीं, बल्कि घरों, स्कूलों और समाज से शुरू होगी। सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि कई माता-पिता अपने बच्चों की बदलती आदतों को समय रहते पहचान ही नहीं पाते। देर रात घर लौटना, पढ़ाई में रुचि कम होना, व्यवहार में चिड़चिड़ापन, अचानक पैसे की मांग बढ़नाकृये सभी संकेत हो सकते हैं। लेकिन अक्सर इन्हें उम्र का असर समझकर नजरअंदाज कर दिया जाता है। यही लापरवाही कई परिवारों को जीवनभर का दर्द दे जाती है। सरकारें हर साल नशा मुक्ति अभियान चलाती हैं, रैलियां निकलती हैं, पोस्टर लगते हैं और भाषण दिए जाते हैं। लेकिन क्या कभी इन अभियानों के प्रभाव का आकलन किया गया? यदि जागरूकता अभियानों के बावजूद नशे का दायरा बढ़ रहा है, तो स्पष्ट है कि रणनीति बदलने की जरूरत है। स्कूलों और कालेजों में नियमित काउंसलिंग, खेल गतिविधियों का विस्तार, रोजगार के अवसर और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता देनी होगी। उत्तराखंड के संदर्भ में यह चुनौती और भी बड़ी है। सीमावर्ती क्षेत्र, पर्यटन, पलायन और बेरोजगारी जैसी परिस्थितियां नशा तस्करों के लिए अवसर बन रही हैं। यदि समय रहते कठोर और व्यापक कदम नहीं उठाए गए, तो यह समस्या सामाजिक संकट का रूप ले सकती है। नशा केवल एक व्यक्ति को बर्बाद नहीं करता यह पूरे परिवार की खुशियां छीन लेता है। एक युवा जब नशे की गिरफ्त में आता है, तो उसके सपनों के साथ माता-पिता की उम्मीदें भी टूट जाती हैं। इसलिए यह लड़ाई किसी एक विभाग की नहीं, बल्कि पूरे समाज की है। सरकार को चाहिए कि नशा तस्करी के खिलाफ जीरो टालरेंस की नीति अपनाए, बड़े गिरोहों पर आर्थिक प्रहार करे और दोषियों को शीघ्र कठोर सजा सुनिश्चित करे। वहीं समाज और परिवारों को भी अपने युवाओं के साथ संवाद बढ़ाना होगा। बच्चों को केवल करियर नहीं, जीवन जीने की दिशा भी देनी होगी। क्योंकि यदि आज हम युवाओं को नशे से नहीं बचा पाए, तो कल केवल आंकड़े बचेंगे युवा नहीं।

जमीन के कूटरचित दस्तावेज तैयार करने पर एक दर्जन लोगों पर मुकदमा

संवाददाता

देहरादून। जमीन के कूटरचित दस्तावेज तैयार करने पर पुलिस ने एक दर्जन लोगों के खिलाफमुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार न्यू प्रफेन्डस कालोनी नई दिल्ली निवासी अशोक गोयल ने पटेलनगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसकी मल्हान ग्रान्ट में जमीन है। सहस्त्रधारा रोड निवासी प्रफूल शर्माए अधिरत सिंहए अभय सिंह पूनम चौधरीए रईस अहमदए आलमए नरेश राणाए हरेन्द्र नेगीए मनोज बुटोलए विजय सिंह नेगीए उमेद सिंह नेगीए रविन्द्र सिंह बिष्ट ने उसकी जमीन के कूटरचित दस्तावेज तैयार कर जमीन हडपने का प्रयास किया। उसने जब उनका विरोध किया तो उन्होंने उसको जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

एक्सिस बैंक का कर्मचारी बनकर ठगे साढे नौ लाख रूपये

संवाददाता

देहरादून। एक्सिस बैंक का कर्मचारी बनकर साढे नौ लाख रूपये की ठगी के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार गुमानीवाला निवासी राहुल टोडरिया ने ऋषिकेश कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसके मोबाइल फोन पर कॉल आयी और कॉल करने वाले ने अपने आपको एक्सिस बैक का कर्मचारी बताते हुए उसको केवाईसी करने के नाम पर नौ लाख 41 हजार रूपये ठग लिये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

कागजों में 'सेवक' और मंचों पर 'महाराज'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। पहले एक खबर बनी। फिर एक आदेश आया और अब उस आदेश ने एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है क्या लोकतंत्र में जनता सबसे ऊपर है या फिर मंच पर बैठे वीआईपी? मेघालय सरकार ने वीआईपी संस्कृति पर ऐसा फैसला लिया है, जिसकी चर्चा पूरे देश में हो रही है। अब वहां किसी भी सरकारी कार्यक्रम में मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, मंत्री, विधायक या अन्य जनप्रतिनिधियों का औपचारिक अभिनंदन, शॉल ओढ़ाने, माला पहनाने और स्मृति चिन्ह देने जैसी परंपरा नहीं होगी। इसके बजाय कार्यक्रमों में आम नागरिकों किसान, शिक्षक, महिला समूह, युवा, सामाजिक कार्यकर्ता या किसी स्थानीय उपलब्धि हासिल करने वाले व्यक्तिकृको सम्मानित किया जाएगा और उन्हें अपनी बात रखने का अवसर मिलेगा।

मेघालय सरकार का तर्क साफ है कि सरकारी कार्यक्रम जनता के टैक्स के पैसे से होते हैं। इसलिए उनका केंद्र भी जनता ही होनी चाहिए, न कि मंच पर बैठे नेता। सरकारी आयोजन विकास कार्यों की समीक्षा, योजनाओं की जानकारी और लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए होने चाहिए, न कि नेताओं के स्वागत-सत्कार के लिए। यह फैसला केवल एक प्रशासनिक आदेश नहीं, बल्कि सरकारी संस्कृति बदलने की कोशिश माना जा रहा है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या उत्तराखंड भी ले सकता है ऐसा फैसला? देवभूमि उत्तराखंड में शायद ही कोई सरकारी कार्यक्रम ऐसा होता हो, जहां मंच पर नेताओं के स्वागत में फूल-मालाओं की कतार न लगी हो। कई बार कार्यक्रम का बड़ा हिस्सा स्वागत भाषण, शाल ओढ़ाने और स्मृति चिन्ह देने में ही निकल जाता है। जनता घंटों इंतजार करती रहती है कि आखिर उनकी समस्या पर कब बात होगी। अगर मेघालय की तरह उत्तराखंड में भी ऐसा

◆स्वागत भाषणों में समय स्वाहा, पहाड़ का दर्द सुनने की नेताओं को फुर्सत ही नहीं
◆सुर्खियों की राजनीति छोड़िए, मेघालय माडल अपनाकर नीयत साफ कीजिए सरकार
◆उत्तराखंड में नेताओं के स्वागत में फिजूलखर्च, समस्याओं पर आज भी पसरा सन्नाटा
◆माला नहीं, जनता का होगा सम्मान, मेघालय सरकार का फैसला बना देशभर में मिसाल

आदेश लागू हो जाए तो तस्वीर काफी बदल सकती है। क्या बदल सकता है? सरकारी कार्यक्रमों में समय की बचत होगी, मंच पर नेताओं के बजाय जनता की उपलब्धियों को सम्मान मिलेगा और गांव की महिला, सैनिक परिवार, किसान, शिक्षक और युवा मंच के केंद्र में होंगे। अधिकारियों का फोकस स्वागत व्यवस्था से हटकर योजनाओं के क्रियान्वयन पर होगा। जनता और सरकार के बीच संवाद बढ़ेगा।

उत्तराखंड के सरकारी कार्यक्रमों में अक्सर देखने को मिलता हैकृकि मंच पर लंबी कुर्सियों की कतार,स्वागत के लिए कई-कई संस्थाओं की लाइन,दर्जनों मालाएं और शाल,नेताओं के लंबे भाषण और अंत में जनता के सवाल पूछने का समय ही खत्म। कई बार तो किसी योजना के शुभारंभ से ज्यादा चर्चा स्वागत समारोह की होती है। ऐसे में मेघालय का माडल उत्तराखंड के लिए भी एक नई सोच पेश करता है। सरकारी कार्यक्रमों का खर्च जनता के टैक्स से चलता है। यदि उसी पैसे से नेताओं का स्वागत, स्मृति चिन्ह, फूल-मालाएं और औपचारिक आयोजन किए जाएं, तो सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह खर्च वास्तव में आवश्यक है? अगर यही राशि किसी विद्यालय, अस्पताल, पुस्तकालय, आंगनबाड़ी, महिला समूह या छात्रवृत्ति पर खर्च हो, तो उसका सीधा लाभ समाज को मिलेगा।

उत्तराखंड विधानसभा चुनाव 2027 करीब हैं। ऐसे समय में यदि राज्य सरकार भी मेघालय जैसी पहल करती है, तो यह केवल प्रशासनिक बदलाव नहीं बल्कि एक बड़ा राजनीतिक संदेश होगा कि सरकार वास्तव में वीआईपी संस्कृति खत्म करना चाहती है। यह कदम विपक्ष और सत्ता दोनों के लिए एक परीक्षा भी होगा। क्योंकि मंच पर सम्मान पाने की परंपरा किसी एक दल तक सीमित नहीं रही है। उत्तराखंड के लोग वर्षों से पलायन, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और पेयजल जैसे मुद्दों पर जवाब चाहते हैं। ऐसे में यदि सरकारी

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

सेवा के मंच पर वोटों की 'फील्डिंग'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में विधानसभा चुनाव 2027 की दस्तक अब साफ सुनाई देने लगी है। राजनीतिक दल केवल सभाओं, रैलियों और सदस्यता अभियानों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज के उन वर्गों तक पहुंच बनाने की कवायद तेज हो गई है, जिनका सीधा प्रभाव जनमत पर पड़ता है। इसी कड़ी में भाजपा के एनजीओ प्रकोष्ठ द्वारा देहरादून में आयोजित एनजीओ समन्वय एवं विकास सम्मेलन ने राजनीतिक हलकों में नई बहस छेड़ दी है। सम्मेलन का संदेश था बदलाव की शुरुआत आपके एक कदम से। मंच से सामाजिक संस्थाओं को संगठित करने, विकास की धारा से जोड़ने और समाज सेवा को नई दिशा देने की बात कही गई। लेकिन राजनीतिक गलियारों में इससे बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि क्या यह वास्तव में समाज सेवा का मंच था, या फिर चुनावी रणनीति का वह हिस्सा, जहां सामाजिक संस्थाओं के प्रभाव को राजनीतिक ताकत में बदलने की कोशिश की जा रही है? यही वह सवाल है, जो इस सम्मेलन को सामान्य कार्यक्रम से आगे ले जाकर राजनीतिक विश्लेषण का विषय बना देता है।

उत्तराखंड में अब तक भाजपा, कांग्रेस और अन्य दल किसान, महिला, युवा, शिक्षक, व्यापार और पेशेवर वर्गों के अलग-अलग प्रकोष्ठ बनाकर संगठन विस्तार करते रहे हैं। लेकिन एनजीओ क्षेत्र को इस स्तर पर संगठित करने की पहल पहली बार इतनी स्पष्ट दिखाई दी। राज्यभर से सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को एक मंच पर बुलाना महज औपचारिक आयोजन नहीं माना जा रहा। चुनावी राजनीति में सामाजिक पूंजी को सबसे प्रभावी पूंजी माना जाता है। जिन संस्थाओं का गांव-गांव, वार्ड-वार्ड और समुदायों में वर्षों का संपर्क है, उनकी बात लोगों तक अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय ढंग से पहुंचती है। यहीं से राजनीतिक विश्लेषण शुरू होता है। गैर-सरकारी संगठन केवल समाज सेवा नहीं करते। वह गांवों में महिला स्वयं सहायता समूहों के साथ काम करते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, नशा मुक्ति,

❑जनसेवा और सामाजिक प्रभाव को राजनीतिक ताकत में बदलने का प्लान
❑भाजपा के एनजीओ समन्वय एवं विकास सम्मेलन ने खड़े किए कई सवाल
❑चुनाव से पहले सामाजिक संगठनों के जरिए तैयार हो रहा चुनावी नेटवर्क

बाल अधिकार, जल संरक्षण, स्वरोजगार और सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन तक उनकी भूमिका रहती है। कई संस्थाएं हजारों स्वयंसेवकों के नेटवर्क के साथ काम करती हैं। यानी उनके पास वह सामाजिक पहुंच है, जिसे राजनीतिक दल वर्षों की मेहनत के बाद तैयार करते हैं। ऐसे में यदि कोई राजनीतिक दल इस पूरे वर्ग से संगठित संवाद शुरू करता है, तो उसके दूरगामी राजनीतिक अर्थ निकाले जाना स्वाभाविक है।

उत्तराखंड में केंद्र और राज्य सरकार की अनेक योजनाएं स्वयंसेवी संस्थाओं की भागीदारी से भी संचालित होती हैं। महिला सशक्तिकरण, पोषण, कौशल विकास, जल संरक्षण, जैविक खेती, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में एनजीओ सक्रिय रहते हैं। यदि यही संस्थाएं किसी राजनीतिक दल के साथ सार्वजनिक मंच साझा करती हैं, तो विपक्ष यह प्रश्न उठा सकता है कि कहीं सरकारी योजनाओं और राजनीतिक संदेशों की सीमाएं धुंधली तो नहीं हो रही हैं। दूसरी ओर, भाजपा का तर्क यह हो सकता है कि सामाजिक संस्थाओं से संवाद लोकतांत्रिक प्रक्रिया का सामान्य हिस्सा है और इससे समाज सेवा के कार्यों को गति मिलती है। राजनीति में चुनाव केवल जातीय और क्षेत्रीय समीकरणों से नहीं जीते जाते। अब सामाजिक प्रभाव रखने वाले समूह भी चुनावी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। महिला समूह...युवा क्लब...धार्मिक संगठन...सांस्कृतिक मंच...स्वयंसेवी संस्थाएं... इन सभी की स्थानीय स्तर पर अपनी पहचान होती है। यदि किसी दल का इनसे संवाद मजबूत होता है, तो वह चुनावी अभियान को अप्रत्यक्ष रूप से भी लाभ पहुंचा सकता है। यही वजह है कि भाजपा का यह सम्मेलन सामान्य संगठनात्मक गतिविधि से कहीं अधिक राजनीतिक महत्व रखता दिखाई देता है।

कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल इस सम्मेलन को आने वाले दिनों में बड़ा राजनीतिक मुद्दा बना सकते हैं। वह यह सवाल उठा सकते हैं क्या समाज सेवा करने वाली संस्थाओं को राजनीतिक मंचों से जोड़ना उचित है? क्या इससे एनजीओ की निष्पक्षता प्रभावित होगी? क्या भविष्य में सरकारी सहायता प्राप्त संस्थाओं पर किसी प्रकार का राजनीतिक दबाव बनेगा?क्या सामाजिक संस्थाएं राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बन जाएंगी? इन सवालों के जवाब आने वाले समय में राजनीतिक बहस

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

बरसात में सर्पदंश से बचाव को स्वास्थ्य विभाग ने जारी की एडवाइजरी

अल्मोड़ा(आरएनएस)। वर्षा ऋतु में सर्पदंश और विषैले कीटों के काटने की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने जनपद में राष्ट्रीय सर्पदंश नियंत्रण एवं रोकथाम कार्यक्रम के तहत व्यापक जनजागरूकता अभियान शुरू किया है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ हरीश चंद्र पंत ने लोगों से सतर्क रहने और सर्पदंश की स्थिति में तत्काल अस्पताल पहुंचने की अपील की है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि सर्पदंश की घटनाओं से बचाव के लिए घर के आसपास साफ-सफाई बनाए रखें, झाड़ियों और कचरे को हटाएं तथा घर में चूहों की संख्या नियंत्रित रखें, क्योंकि चूहे सांपों को आकर्षित करते हैं। रात के समय बाहर निकलते समय टॉर्च का उपयोग करें और खेतों या पानी भरे स्थानों में काम करते समय जूते तथा सुरक्षात्मक वस्त्र अवश्य पहनें। बच्चों को झाड़ियों, लकड़ियों के ढेर और सुनसान स्थानों पर खेलने से भी बचाने की सलाह दी गई है। उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को सांप काट ले तो घबराएं नहीं। पीड़ित को शांत रखें, अनावश्यक रूप से चलने-फिरने न दें और प्रभावित अंग को यथासंभव स्थिर रखें। बिना किसी देरी के उसे निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाएं। झाड़-फूंक, चीरा लगाना, विष चूसना, कसकर पट्टी बांधना या किसी भी तरह के घरेलू उपचार से बचना चाहिए। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में सर्पदंश के उपचार की व्यवस्था और एंटी-स्नेक वेनम उपलब्ध है। समय पर अस्पताल पहुंचने से सर्पदंश का प्रभावी और सुरक्षित उपचार संभव है।

बैठक में न बुलाने पर आक्रोश

पिथौरागढ़(आरएनएस)। जिला युवा सलाहकार समिति की बैठक में आमंत्रित नहीं किए जाने को लेकर युवा कार्यकर्ताओं में नाराजगी है। युवा कार्यकर्ता प्रदीप महरा और अजय ओली ने कहा कि जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला युवा सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई थी। बैठक में जिले के विभिन्न विभागों, संस्थाओं और संबंधित व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था। बैठक में युवाओं, शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक विकास से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद भी उन्हें बैठक में शामिल होने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया।

कृषि वैज्ञानिकों ने सुझाए फल, सब्जी और नर्सरी प्रबंधन के गुर

काशीपुर(आरएनएस)। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने आने वाले सीजन में फल और सब्जी प्रबंधन की जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डा अनिल चंद्र ने बताया कि अगस्त माह में मैदानी जिलों ऊधमसिंह नगर और हरिद्वार में मानसून का क्रम जारी रहता है। लेकिन इसी के साथ उच्च तापमान और उमस भरी आद्रता बनी रहती है। बताया कि इस समय उद्यानों में जल निकासी प्रबंधन, अगेती सब्जियों की नर्सरी तैयारी, कीट व फफूंद जनित रोगों की रोकथाम तथा बागों की संवार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। डॉ चंद्र के अनुसार जल निकासी और बेसिक रखरखाव जरूरी है। अमरूद और नींबू वर्गीय बागों में कीटों व पक्षियों से फलों की सुरक्षा के लिए उचित उपाय करें। जुलाई में लगाए गए नए पोधो की थालों में निराई गुड़ाई करें। अगेती फूल, पत्ता गोभी की ऊंची उठी हुई क्यारियों पर नर्सरी की बुवाई करें। सर्दियों में टमाटर, बैंगन, मिर्च के लिए नर्सरी तैयार करें। बागवानी विशेषज्ञ डॉ चन्द के अनुसार उच्च आद्रता और तापमान के कारण अगस्त माह में फफूंद जनित रोग और रस चूसने वाले कीटो का प्रकोप बढ़ सकता है। सर्दियों में फूल प्राप्त करने के लिए गेंदें की पौंध की रोपाई और गुलदाउदी की कटिंग लगाएं।

चम्पावत नगर में पालतू श्वान पशुओं का पंजीकरण होगा जरूरी

चम्पावत(आरएनएस)। नगर पालिका बोर्ड की बैठक में नगर क्षेत्र में पालतू श्वान पशुओं के अनिवार्य पंजीकरण कराए जाने का निर्णय लिया गया है। पालिकाध्यक्ष प्रेमा पांडेय की अध्यक्षता में हुई बैठक में श्वान पशुओं के पंजीकरण सहित कई अन्य प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किए गए। बैठक में पालतू श्वान पशुओं के पंजीकरण एवं नियमन के लिए प्रस्तावित श्वान पशु उपविधि 2026 के आलेख पर जनसामान्य से सुझाव एवं आपत्ति आमंत्रण हेतु प्रकाशन पर चर्चा की गयी। प्रस्तावित उपविधियों में मुख्यत तीन माह अथवा इससे अधिक आयु के श्वान पशु के पालक को श्वान को पालिका में पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा।पंजीकरण प्रत्येक वित्तीय वर्ष की अंतिम तिथि अर्थात 31 मार्च तक वैध रहेगा तथा अग्रिम वित्तीय वर्ष हेतु श्वान पशु के पंजीकरण का नवनीकरण किया जाना होगा। पशु पालक को अपने में परिसर में श्वान पशुओं होने की स्पष्ट जानकारी भवन के प्रवेश द्वार में जन सामान्य को सचेत किये जाने हेतु चेतावनी बोर्ड सूचनार्थ प्रर्दशित करना अनिवार्य होगा। बैठक में पालिका कार्मिकों को नगर में सफाई कार्य के लिए आवश्यक सुरक्षा उपकरण एवं सामग्री उपलब्ध कराये जाने अनुमोदन प्रदान किया गया।डोर टू डोर कूड़ा संग्रहण प्रणाली को प्रभावी बनाते हुए खुले में कूड़ा फेंकने वाले चिन्हित कर दंडित किये जाने के लिए सीसीटीवी नेटर्वक के विस्तारीकरण सहमति प्रदान की गयी। अनाधिकृत रूप से पालिका मार्गो को क्षतिग्रस्त कर जल संयोजन लेने वाले के विरूद्ध कार्यवाही को जल संस्थान एवं संबंधित विभागों से आपसी समन्वय के आधार पर कार्य किये जाने की चर्चा की गयी।

कंडाली की 'छपाक' और बचपन का 'शोर'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। अरे... कंडाली लग गई! यह आवाज कभी पहाड़ के हर गांव में सुनाई देती थी। अगले ही पल बच्चों का शोर, हंसी और भागमभाग शुरू हो जाती थी। कोई हाथ सहला रहा होता, कोई पत्ते रगड़ रहा होता, तो कोई साथी को चिढ़ाते हुए कहता अब समझ आया, खेत में दौड़ने का नतीजा! पहाड़ में बचपन का मतलब सिर्फ स्कूल जाना नहीं था। बचपन का मतलब थाकृनंगे पांव पगडंडियों पर दौड़ना, जंगलों में गाय-बकरियां चराना, गदेरों में मछलियां पकड़ना, पेड़ों पर चढ़ना और इन्हीं सबके बीच कभी न कभी कंडाली की छपाक खाना। यह छपाक सिर्फ शरीर पर नहीं लगती थी, बल्कि पहाड़ के हर बच्चे की यादों में हमेशा के लिए दर्ज हो जाती थी। कंडाली का पौधा दिखने में जितना साधारण, उसका स्पर्श उतना ही तेज। इसके महीन कांटे त्वचा में चुभते और कुछ ही सेकंड में हाथ-पैर जलने लगते। ऐसा लगता मानो किसी ने सैकड़ों सूइयां एक साथ चुभो दी हों। लेकिन पहाड़ के बच्चों के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। दो मिनट रोने के बाद फिर वही खेल शुरू।

आज की तरह उस समय हर घर में दवा नहीं होती थी। दादी कहती थींकृबांज का पत्ता रगड़ दो, कोई कहता बिच्छू बूटी का असर अपने आप उतर जाएगा, तो कोई मिट्टी या ठंडा पानी लगाने की सलाह देता। कुछ देर बाद जलन कम हो जाती और बच्चे फिर जंगल की ओर निकल पड़ते। कई गांवों में कंडाली सिर्फ गलती से नहीं लगती थी। दोस्तों की शरारत में भी इसका खूब इस्तेमाल होता था। किसी की पीठ पर हल्की सी कंडाली छुआ दी और फिर पूरा गांव हंसी से गूंज उठता। उस समय गुस्सा भी आता था और दोस्ती भी उतनी ही मजबूत रहती थी।

समय बदला। विज्ञान ने बताया कि यही कंडाली पोषक तत्वों का खजाना है। इससे स्वादिष्ट साग बनता है, आयुर्वेदिक दवाइयां तैयार होती हैं और आज यह जैविक खेती व पहाड़ी व्यंजनों की पहचान बन चुकी है जो पौधा कभी बच्चों को रुलाता

था, वही आज शहरों के बड़े-बड़े होटलों के मेन्यू में जगह बना चुका है। मोबाइल, इंटरनेट और कोचिंग के दौर में पहाड़ का

◆पहाड़ की पगडंडियों, गदेरों और बेफिक्र दिनों की खूबसूरत दास्तान
◆दो मिनट का रोना और फिर पहाड़ की पगडंडियों पर वही खेल शुरू
◆नंगे पांव दौड़ना, गदेरों में छलांगें व बिछुआ घास की वह मीठी चुभन
◆हर पहाड़ी के दिल में आज भी जिंदा है बचपन का खट्टा-मीठा दर्द

बचपन भी बदल गया है। अब बच्चे जंगलों में कम जाते हैं। पगडंडियों की जगह सड़कें हैं, गदेरों की जगह मोबाइल गेम्स और पेड़ों पर चढ़ने की जगह सोशल मीडिया ने ले ली है। इसलिए नई पीढ़ी शायद कभी उस एहसास को नहीं समझ पाएगी, जब कंडाली की छपाक लगते ही पूरा दोस्ताना ठहाकों में बदल जाता था।

पहाड़ छोड़ चुके लाखों लोग जब अपने गांव लौटते हैं और कहीं खेत की मेड़ पर कंडाली का पौधा देखते हैं, तो अनायास मुस्कुरा देते हैं। उन्हें याद आता है वह बचपन...वह पगडंडी...वह खेत...वह बारिश...और कंडाली की वह तेज जलन, जो आज सबसे मीठी याद बन चुकी है। कभी जिस बिच्छू घास से बचकर भागते थे, आज उसी की तस्वीर देखकर बचपन लौट आता है। शायद इसलिए पहाड़ के लोग कहते हैं कंडाली की छपाक भूल सकते हो, लेकिन उससे जुड़ी यादें कभी नहीं।

किसानों को मुफ्त बिजली-पानी दिलाए सरकार

रुड़की(आरएनएस)। किसान मजदूर संगठन सोसायटी ने विधायक वीरेंद्र जाति को ज्ञापन सौंपकर किसानों और बेरोजगार युवाओं के मुद्दों को विधानसभा सत्र में उठाने की मांग की।

संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष महक सिंह सैनी ने बताया कि इससे पहले जेएम के माध्यं से सीएम को ज्ञापन भेजा था लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने कहा कि किसानों को सिंचाई के लिए नलकूपों और नहरों से शत-प्रतिशत मुफ्त बिजली और पानी उपलब्ध कराया जाए। कहा कि किसान महंगे बिजली बिल और वाटर सेस का बोझ झेल रहे हैं, जबकि कई अन्य राज्यों में किसानों को मुफ्त या रियायती बिजली मिल रही हैासरकारी, अर्द्धसरकारी और निजी उद्योगों, विशेषकर सिडकुल क्षेत्रों में स्थानीय युवाओं के लिए न्यूनतम 70 प्रतिशत रोजगार अनिवार्य करने पर जोर दिया।

गोविंद घाट पर चला स्वच्छता अभियान, गंगा में कचरा न डालने की अपील

हरिद्वार(आरएनएस)। गंगा समग्र के तत्वावधान में गोविंद घाट पर स्वच्छता अभियान और गंगा आरती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय संगठन मंत्री अंबरीश ने गंगा को स्वच्छ और निर्मल बनाए रखने के लिए जनभागीदारी पर जोर देते हुए लोगों से गंगा में किसी भी प्रकार का कचरा नहीं डालने की अपील की। कार्यक्रम की शुरुआत गोविंद घाट पर स्वच्छता अभियान से हुई। गंगा समग्र के कार्यकर्ताओं ने घाट और गंगा तट पर फैले प्लास्टिक, गंदे कपड़ों तथा अन्य कचरे को एकत्र कर साफ-सफाई की और लोगों को स्वच्छता का संदेश दिया। इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार के बीच मां गंगा की आरती की गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।क्षेत्रीय संगठन मंत्री अम्बरीष ने कहा कि मां गंगा करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र हैं। गंगा को प्रदूषित करना हमारी संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों के साथ अन्याय है। उन्होंने श्रद्धालुओं से अपील की कि वे गंगा में पुराने कपड़े, प्लास्टिक, पूजा सामग्री या किसी भी प्रकार का कचरा न डालें और दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करें।गंगा समग्र के प्रांत प्रमुख रेशू चौधरी ने कहा कि गंगा संरक्षण केवल सरकार या प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता से ही यह लक्ष्य पूरा हो सकता है। समाजसेवी दिनेश मलिक ने भी गंगा की स्वच्छता के लिए जनजागरूकता बढ़ाने पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में कार्यकर्ताओं और श्रद्धालुओं ने गंगा की स्वच्छता और संरक्षण के लिए निरंतर जनजागरण अभियान चलाने का संकल्प लिया। इस दौरान तरुण सिरोही, सुधीर बालियान, अमित तिवारी, शुभम, दीपक, अंकित, आकाश, प्रमोद कुमार, अभिषेक, ऋषभ, राधे कृष्ण शर्मा, गजेंद्र चौहान, गोपाल आदि मौजूद रहे।

जोड़ों के दर्द या अर्थराइटिस की समस्या से आराम दिलाती है ब्रोकली

उम्र बढ़ने के साथ अक्सर जोड़ों का दर्द सताने लगता है। जोड़ों का दर्द या अर्थराइटिस एक ऐसी समस्या है, जिससे हर उम्र के लोग परेशान रहते हैं। पहले के समय में यह रोग केवल बढ़ती उम्र में होता था। पर आजकल युवा वर्ग में भी अर्थराइटिस और जोड़ों के दर्द की समस्या देखी जा रही है। जोड़ों में दर्द होने पर चलने-फिरने में बहुत परेशानी होती है। ब्रोकली में भरपूर मात्रा में प्रोटीन, कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, विटामिन सी और क्रोमियम मौजूद होते हैं। ब्रोकली में पाए जाने वाले पोषक तत्व इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने का काम करते हैं। शरीर में खून की मात्रा बढ़ने से अर्थराइटिस की समस्या से छुटकारा मिलता है।

अगर आप अर्थराइटिस की समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं तो अपने खाने में ओमेगा 3 फैटी एसिड युक्त आहार को शामिल करें। फिश ऑयल, एलगी ऑयल और सैमन मछली में ओमेगा 3 फैटी एसिड की भरपूर मात्रा पाई जाती है।

लहसुन की तासीर गर्म होती है जिसके कारण यह हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है. रोजाना लहसुन की एक या दो कली खाने से अर्थराइटिस की समस्या से आराम मिलता है।

हल्दी में भी एंटीबायोटिक, एंटीबैक्टीरियल, ऐंटिफंगल और गुणों की भरपूर मात्रा पाई जाती है जो बीमारी फैलने वाले बैक्टीरिया को खत्म करने में सहायक होती है। हल्दी का सेवन करने से अर्थराइटिस का दर्द कम हो जाता है। (आरएनएस)

नारियल के शुभ लाभ

हिन्दू धर्म के मुताबिक पूजा में नारियल बहुत महत्पूर्ण माना जाता है। घर की पूजा, नए घर क प्रवेश, नई गाडी, नया बिजनेस शुरू करना हो या किसी भी शुभ करना हो नारियल फोडकर किया जाता है। भारतीय सभ्यता में, पूजा-पाठ में नारियल को शुभ और मंगलकारी माना गया है।

महा लक्ष्मी की प्राप्ति में एकाक्षी नारियल का विशेष महत्व है। अमूमन पर नारियल में दो काले बिंदू होते हैं, बहुत कम मात्रा में ऐसे नारियल मिलते हैं जिस पर एक ही काला बिंदू होता है। इसे ही एकाक्षी नारियल कहते हैं। एकाक्षी नारियल घर में स्थायी संपत्ति, सुख और शांति देता है।

नारियल को संस्कृत भाषा में श्रीफल कहा गया है। श्री का अर्थ होता है लक्ष्मी। लक्ष्मी के बिना कोई भी शुभ कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है इसलिए शुभ कार्यो में नारियल अवश्य ही रखा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इससे शुभ कार्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती है।

नारियल ऊपर से सख्त आवरण से ढका होता है इसलिए बाहरी प्रदूषण का इस पर कोई प्रभाव नहीं होता है। यह अंदर से निर्मल और पवित्र होता है।

अगर आपको व्यापार में लगातर हानि हो रही हो तो गुरूवार के दिन एक नारियल लेकर सवा मीटर पीले वस्त्र में लपेटे, एक जोडा जनेऊ, सवा पाव पीले मिष्ठान के साथ किसी विष्णु मंदिर में हानि रोकने में प्रार्थना व संकल्प के साथ रख आएं। फिर देखिए कुछ ही दिनों में व्यापार में तेजी आने लगेगी।

जिस घर में पूजित नारियल हो उसे घर में सदस्यों पर तांत्रिक प्रभाव नहीं होते हैं।

महिलायें रोजाना करें व्यायाम, नहीं होंगी डिप्रेशन का शिकार

कई बार हमारे जिंदगी में कुछ ऐसा हो जाता जिसके चलते हम काफी परेशान रहते है यह तक की हम डिप्रेशन का भी शिकार बन जाते है और फिर डिप्रेशन से बाहर निकलना बेहद मुश्किल होता है। शरीर के जख्म दिखाई देते हैं तो उन्हें भरने की दवा का इंतजाम जल्द से जल्द किया जाता है। डिप्रेशन एक ऐसी घातक बीमारी है जो किसी भी इंसान को भीतर से पूरी तरह खोखला कर देता है।

डिप्रेशन में व्यायाम है असरदार:

डिप्रेशन में इंसान खुद को तन्हा महसूस करता है और फिर भी अकेला रहना चाहता हैं। डिप्रेशन के शिकार लोगों में दिल की बीमारी के खतरे भी बढ़ जाते हैं।

इस खतरे को कम करने में दवाइयों के बजाये अगर व्यायाम का इस्तमाल किया जाये तो ज्यादा असर होता है क्यूंकि व्यायाम इंसान को पूरी तरह मजबूत करने में अहम भूमिका निभाता है।

रिसर्च:

बिगड़ते अवसाद और दिल की बीमारी के शिकार लोगों पर व्यायाम से सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। काफी हद तक वे डिप्रेशन से बाहर आए। हृदय रोगी जो अवसाद से भी ग्रस्त हैं व्यायाम जरूर करें।

व्यायाम करने के पीछ एक लॉजिक ये भी है कि इससे सिर्फ शरीर हेल्दी नहीं होता है। दिमाग में भी सकारात्मक विचार आते हैं।(आरएनएस)

चेहरे पर लगाएं नारियल का तेल, करता है नाइट सीरम का काम

नारियल से निकाला गया तेल या सूखी हुई कोकोनट फ्लेक्स साउथ इंडियन कुकिंग यानी कि खाना बनाते समय इस्तेमाल की जाती हैं। लेकिन नारियल के तेल के और भी कई फायदे हैं। अब, जब हम सभी अपने-अपने घरों में हैं और बाहर सैलून नहीं जा सकते तो अब घर के इलाज ही हमारे काम आएंगे। अगर आपको नहीं पता, तो बता दें किि नारियल के तेल के कई ब्यूटी बेनिफिट्स भी हैं। हम अपनी स्किन के लिए यूं तो कई ब्यूटी प्रोडक्ट्स इस्तेमाल करते हैं, लेकिन घर पर ही ऐसी कई चीजें होती हैं जिससे आप अपनी स्किन का खास ख्याल रख सकते हैं।

नारियल तेल को अगर कम मात्रा में इस्तेमाल किया जाए तो यह सभी स्किन टाइप के लिए अच्छी होती है। इसमें फैटी एसिड होते हैं जो स्किन को हाइड्रेट करने कर सुरक्षित रखने के काम आते हैं। इसमें लिनोलेइक एसिड, विटामिन स्न और एंटीबैक्टीरियल प्रॉपर्टीज होती हैं। इसे रात भर चेहरे पर लगाने से कई फायदे होते हैं। नारियल का तेल आपकी स्किन के लिए नाइट सीरम का काम करता है।

चेहरे पर रात भर नारियल के तेल का किस तरह करें इस्तेमाल?

स्टेप 1: सबसे पहले नारियल के तेल को अपने दोनों हाथों के बीच रब कर लें। इससे तेल का टेक्सचर एकदम लाइट और सिल्की हो जाएगा।

स्टेप 2: अब इसे अपने चेहरे और गर्दन पर लगाएं। इसे आप छाती और शरीर के अन्य भागों पर भी लगा सकते हैं। आपके शरीर के जिन भागों में अधिक ड्राइनेस है, इसे वहां भी लगा सकते हैं।

स्टेप 3: जमा हुआ या थिक टेक्सचर का तेल चेहरे पर नहीं बचना चाहिए। अगर है तो इसे रुई की मदद से हटा लें। रातभर आपकी स्किन पर नारियल तेल की लाइट परत रहने दें।

स्टेप 4: नारियल के तेल को आंखों में न जाने दें।

आप नारियल के तेल को रात भर लगाने से पहले इसे मेकअप रिमूवर के तौर पर भी इस्तेमाल कर सकती हैं। कई लोग नारियल के तेल को स्पॉट ट्रीटमेंट यानी कि चेहरे के दाग-धब्बे दूर करने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। इसे आंखों के नीचे और स्किन पर ड्राई पैचेज को हटाने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

चेहरे पर रात भर नारियल तेल लगाने के फायदे

- नारियल का तेल आपके स्किन की प्रोटेक्टिव लेयर की मदद करता है। इससे आपकी स्किन की प्रोटेक्टिव लेयर मॉइस्चर को बचाए रखती है और इससे आपकी स्किन जंवा, फ्रेश, हाइड्रेटेड नजर आती है।

- नारियल के तेल में एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रॉपर्टीज होती हैं। इससे ऐसी स्किन टाइप जिस पर पैचेज, इर्रिटेशन या इससे सम्बंधित परेशानियां रहती हैं, को बेहतर परिणाम मिलता है।

- इसमें मौजूद लॉरिक एसिड कोलेजन प्रोडक्शन के लिए अच्छा होता है और कोलेजन स्किन को टाइट रखने में मदद करता है। इससे फाइन लाइन्स और झुर्रियों से बचाव होता है।

क्या है इसके साइड-इफेक्ट्स?

नारियल तेल का रात में इस्तेमाल करना हो सकता है कि सभी के लिए सही न हो। ऑयली या एक्ने-प्रोन स्किन के लिए शायद यह फायदेमंद न हो। नारियल का तेल ऐसी स्किन वालों के लिए पोर्स बंद करने का काम कर सकता है। जहां कुछ लोगों की स्किन पर यह स्किन साफ़ करने का काम करता है, वहीं दूसरों के लिए यह एक्ने बढ़ने का काम कर सकता है। अगर आपकी ऑयली स्किन है तो इसे यूज करने से आपको ब्लैकहेड्स, पिम्पल्स, व्हाइटहेड्स जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

शब्द सामर्थ्य -008

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :

1. पानी, नीर, अंबु 2. आना-जाना, आवागमन 5. बहुत, बढ़िया 6. दूर रहने वाला (घटना) जो वर्तमान में न घट सके 8. अबोध, नासमझ, अनाड़ी 10. सब्जी, शाक 11. निशान, उद्देश्य, अनुमान योग्य वस्तु 12. नाखून 13. द्रव पदार्थ 15. सूनसान, जनविहीन स्थान 16. चटकीला, चमकीला, चटपटा, गौरैया 18. भगवान, खुदा 19. इन दिनों, वर्तमान दिनों में 20. अग्नि, पावक 21. अन्नकण, अनाज का टुकड़ा 22. टालमटोल, बहाने बाजी 24. भैया की पत्नी 25. पांच से छोटी एक विषम संस्था 26. हत्या, कत्ल.

ऊपर से नीचे

1. दुनिया, संसार, ठोस रूप में परिवर्तित करना 2. चमक, पानी 3. बाजीगर, जादू का खेल दिखाने वाला 4. एक पंजाबी प्रेमगीत, रांझा की प्रेमिका 5. मार-काट, खून-कत्ल 7. भूमि, जमीन, भू-भाग 9. बहुत बड़ा दानी, 10. संगीत के सुरों की संख्या 14. लचीला, लोचयुक्त 17. खिसकना, अपने स्थान से हटना, विचलित होना 19. प्रवेश करना, पधारना, आना 20. धूप-दीप से पूजा 22. इसी समय 23. गुस्सा, कहर.

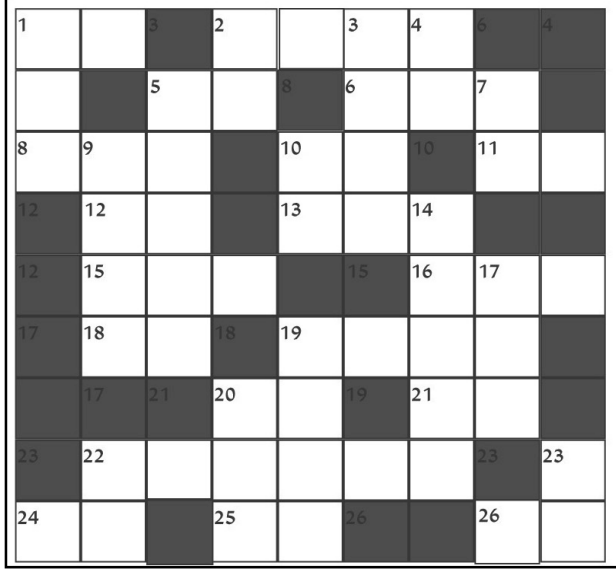

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 07 का हल

स्वा	द		सा	म	ना		कै	दी
व		ख	ल	ना	य	क		वा
लं	प	ट		ना	क	क	ट	ना
बी		प				ड़ी		प
	अ	ट	प	टा			शा	न
स	ह		यो			र	ति	
ह	म		द	र	ब	द	र	
म	क	र		सी	ल			
त		क्षा		द	वा	खा	ना	

जिम में पसीना बहाने के बाद भी नहीं जा रही पेट-कमर की चर्बी, आजमाएं ये जादुई ड्रिंक

पेट-कमर की चर्बी आपका लुक बिगाड़ रही है। जिम में घंटों पसीना बहाने, वर्कआउट करने के बावजूद ये कम नहीं हो रहा है तो चिंता की बात नहीं है, क्योंकि दो ऐसी चीज भी हैं, जो बिना मेहनत ही शरीर का फैट गायब कर सकते हैं। बस खाना खाने से पहले इन्हें लेना होगा। बेहद सस्ती ये चीज शुगर और कोलेस्ट्रॉल को कम कर देती है। ये खाने के जो कैलोरी और वसा मिलती है, उसे सोख लेती हैं और देर तक पेट को भरा रखती हैं। आइए जानते हैं क्या है इतनी कमाल की चीज और इससे क्या-क्या फायदा हो सकता है।।

चर्बी को बर्फ की तरह पिघला देंगी ये दो चीज

फैट कम करने वाली ये दोनों चीज एप्पल साइड विनेगर और इसबगोल हैं। लंच या डिनर से पहले इन दोनों का इस्तेमाल पेट की चर्बी कम कर सकती है। इसके कई फायदे सेहत को मिलते हैं। बिना मेहनत के ये शरीर की फैट को जला सकते हैं।

एप्पल साइडर विनेगर

सुबह सबसे पहले एक गिलास पानी में एक बड़ा चम्मच एप्पल साइडर विनेगर मिलाकर पिएं। इससे चर्बी तेजी से कम हो सकती है। एप्पल साइडर विनेगर मेटाबॉलिक सिंड्रोम की दवा के तौर पर इस्तेमाल की जाती है। जर्नल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रिशन के मुताबिक, इसमें एसिटिक एसिड पाया जाता है, जो लंबे समय तक पेट को भरा रखने में मदद मिलता है। इसके ज्यादा खाने से बच जाते हैं और कम कैलोरी शरीर तक पहुंचती है। एप्पल साइडर विनेगर ब्लड शुगर लेवल को भी कंट्रोल में रखने का काम करता है। दिन में दो या तीन बार आप इसका सेवन खाने से 15 मिनट पहले कर सकते हैं।

इसबगोल के फायदे

जब भी खाना खाएं तो उसके करीब आधा घंटे पहले इसबगोल का सेवन कर सकते हैं। आप चाहें तो एप्पल साइडर विनेगर में इसे मिलाकर पी सकते हैं। हाई फाइबर होने के वजह से ये फैट को जलाता है। इसे खाने से पेट भरा लगता है और खाना कम खाया जाता है। सुबह-सुबह खाली पेट नींबू पानी में इसबगोल पाउडर मिलाकर पीना फायदेमंद होता है। खाने से पहले दही में भी इसे मिलाकर पी सकते हैं। इन दोनों चीजों का सेवन करीब एक महीने तक करने पर पेट और कमर की चर्बी तेजी से पिघल जाती है।

अच्छे मेकअप का राज़ उसके बेस मेकअप में छुपा होता है

अगर आप सोंचती हैं कि बेस मेकअप करने में सिंपल होता है, तो ऐसा नहीं है। यहां पर हम आपको सही ब्राइडल बेस मेकअप करने की विधि बताएंगे। किसी भी अच्छे मेकअप का राज़ उसके बेस मेकअप में छुपा होता है। अगर आप मेकअप को शुरुआती ढंक से ठीक नहीं करेंगी तो आगे चल कर आपका मेकअप बड़ा ही भद्दा दिखेगा। अगर आप सोंचती हैं कि बेस मेकअप करने में सिंपल होता है, तो ऐसा नहीं है। यहां पर हम आपको सही ब्राइडल बेस मेकअप करने की विधि बताएंगे। बेस मेकअप से ही आपके आगे का ब्राइडल मेकअप अच्छा होगा। आइये जानते हैं कैसे करें बेस मेकअप दुल्हनों के चेहरे के लिये!

शेड: अपने हाथों से जॉ लाइन पर फाउंडेशन का शेड लगाएं। जॉ लाइन यानी जबड़े पर ही आपको फाउंडेशन का सही शेड पता चलता है।

मॉइस्चराइजर: मेकअप शुरु करने से पहले चेहरे पर मॉइस्चराइजर जरुर लगाएं। इससे चेहरे पर दरारें नहीं दिखती और मेकअप स्मूथ लगता है।

प्राइमर: अगर आपको स्मूथ मेकअप चाहिये तो चेहरे पर प्राइमर लगाना ना भूलें। इसे मेकअप के स्टार्ट में ही लगाना चाहिये। इससे मेकअप बड़ी देर तक चेहरे पर टिका रहता है।

फाउंडेशन: चेहरे पर हर तरफ फाउंडेशन लगाएं। यह ऐसा दिखना चाहिये जैसे आपने अपने चेहरे पर पेंट किया हो।

ब्लेंड करें: अब अंडे के शेप वाला स्पॉंज यूज़ कर के चेहरे पर फाउंडेशन को ब्लेंड करें। ऐसा करने से फाउंडेशन पूरे चेहरे पर मिक्स को हर समा जाएगा।

कंसील: कंसीलर को आंखों के नीचे लगाएं जिससे उसका कालापन दूर हो जाए। इसके बाद इसे नाक को उभारने के लिये भी लगाएं। इसे होठों के किनारों पर लगाएं, जहां पर कालापन रहता है।

ब्रोंजर: इसका प्रयोग चीकबोन के नीचे करें, जिससे जॉ लाइन ठीक से शेप में आ सके।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

ब्लैक शिमरी टॉप और डेनिम में पलक तिवारी ने ढाया कहर!

एक्ट्रेस श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। पलक अपने प्रोजेक्ट्स के साथ-साथ अपने लाजवाब ड्रेसिंग सेंस और बोल्ड फैशन चॉइस के लिए सुर्खियों में बनी रहती हैं। हाल ही में पलक ने इंस्टाग्राम पर अपने नए फोटोशूट की कुछ बेहद सिजलिंग तस्वीरें शेयर की हैं।

इन तस्वीरों में पलक का अंदाज इतना बोल्ड और ग्लैमरस है कि फैंस उनके लुक से अपनी नजरें नहीं हटा पा रहे हैं। पलक ने एक बॉडी-हगिंग मैटेलिक ब्लैक कलर का फुल-स्लीव टॉप पहना हुआ है, जिसमें फ्रंट-ओपन बटन डिटेलिंग है। यह शिमरी टॉप उनके लुक को एक एजी और नाइट-पार्टी वाइब दे रहा है।

इस टॉप के साथ पलक ने लो-वेस्ट, सुपर वाइड-लेग ग्रे डेनिम जींस पेयर की है, जो उनके टोंड फिगर को बेहद खूबसूरती से फ्लॉन्ट कर रही है। यह क्लासिक ब्लैक और ग्रे का कॉम्बिनेशन विजुअली काफी अट्रैक्टिव लग रहा है।

तस्वीरों में पलक वह अपने चेहरे पर बिखरी जुल्फों को संभालते हुए सीधे कैमरे में गहराई से देख रही हैं, जिससे उनके किलर एक्सप्रेशंस उभर कर आ रहे हैं। कुछ तस्वीरों में वह बेहद सेक्सी और कॉन्फिडेंट पोज देती नजर आ रही हैं।

अपने इस कैजुअल लेकिन हॉट लुक को कम्पलीट करने के लिए पलक ने मेकअप और एक्सेसरीज पर भी खास ध्यान दिया है। पलक ने ब्राउन टोन का न्यूड ग्लैम मेकअप चुना है। उन्होंने अपने बालों को हल्का वेवी टच देकर साइड-पार्टिंग के साथ खुला छोड़ा है।

पलक तिवारी की इन तस्वीरों ने इंटरनेट पर आते ही तहलका मचा दिया है। कमेंट सेक्शन में फैंस हार्ट और फायर इमोजीस की बरसात कर रहे हैं। कोई उन्हें गॉर्जियस कह रहा है तो कोई एब्सोल्यूट स्टनर।

बारिश का जादू? नुसरत भरूचा का मजेदार पोस्ट हुआ वायरल

अभिनेत्री नुसरत भरूचा ने अपने घर पर वर्कआउट करते हुए कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं, जिनमें उनकी फिटनेस के साथ-साथ बारिश से सराबोर खूबसूरत माहौल ने भी सबका ध्यान खींच लिया। तस्वीरों में नुसरत व्हाइट स्पोर्ट्स टॉप, ब्राइट रेड शॉर्ट्स और मैचिंग स्नीकर्स पहने नजर आ रही हैं। वह डंबल्स के साथ एक्सरसाइज, स्क्वैट्स और स्ट्रेचिंग करती दिखाई दे रही हैं। वहीं कुछ तस्वीरों में वह अपनी बालकनी में खड़े होकर बारिश के मनमोहक नज़ारे का आनंद लेती भी नज़र आ रही हैं। वैसे घर पर रहकर फिटनेस को प्राथमिकता देने के साथ उन्होंने एक बार फिर हेल्दी लाइफस्टाइल की झलक दिखाई है। हालांकि, इस पोस्ट की सबसे खास बात उसका कैप्शन है। मानसून के खूबसूरत मौसम और हरियाली से घिरे नज़ारों के बीच नुसरत ने मजाकिया अंदाज में लिखा, उन्होंने कहा था, वर्क फ्रॉम होम उनका यह कैप्शन साफ तौर पर इशारा करता है कि ऐसे सुहाने मौसम में काम पर ध्यान केंद्रित करना कितना मुश्किल हो जाता है।

पोस्ट में बालकनी से दिखता हराभरा नज़ारा, बादलों से घिरा आसमान और शांत वातावरण मानसून की खूबसूरती को और भी खास बना रहा है। यही वजह है कि नुसरत का यह पोस्ट उन लोगों से भी जुड़ गया जो घर से काम करते हुए अक्सर बारिश के मौसम में खिड़की या बालकनी की ओर खिंचे चले जाते हैं।

नुसरत भरूचा अपने सोशल मीडिया पर अक्सर अपनी रोजमर्रा की जिंदगी की झलकियां साझा करती रहती हैं। कभी फिटनेस, कभी फैशन, कभी ट्रैवल तो कभी पर्दे के पीछे के खास पलों से सजे उनके पोस्ट फैंस को काफी पसंद आते हैं। इस बार भी उनका यह हल्का-फुल्का और रिलेटेबल पोस्ट सोशल मीडिया पर लोगों का दिल जीत रहा है और याद दिला रहा है कि कभी-कभी काम के बीच कुछ पल प्रकृति का आनंद लेना भी जरूरी होता है।

खुली सीवरेज की दुर्गंध से छात्रों की पढ़ाई प्रभावित

उत्तरकाशी(आरएनएस)। पीएमश्री अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज खरादी परिसर से होकर गुजर रही होटलों की खुली सीवरेज लाइन छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य और पढ़ाई के लिए समस्या बन गई है। लाइन से जगह-जगह हो रहे रिसाव के कारण विद्यालय परिसर में गंदगी और दुर्गंध फैली रहती है। वहीं, दूषित पानी के नाले के माध्यम से यमुना नदी में मिलने के आरोपों ने पर्यावरण प्रदूषण को लेकर भी चिंता बढ़ा दी है।विद्यालय प्रशासन और अभिभावकों का कहना है कि इस समस्या की शिकायत कई बार अधिकारियों से की जा चुकी है। बीते 23 जनवरी को आयोजित जन शिकायत शिविर में जिलाधिकारी प्रशांत आर्य को भी लिखित शिकायत सौंपकर सीवरेज लाइन हटाने और तत्काल कार्रवाई की मांग की गई थी। जिलाधिकारी के निर्देश के बावजूद छह माह बाद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है।अभिभावक संजय रावत, जनक सिंह, सोबेन्द्र सिंह, गुरुदेव चौहान, नरेश रावत, कैलाश राणा और सुमन भारती ने कहा कि खुले सीवर और दुर्गंध के कारण सैकड़ों छात्र-छात्राओं को परेशानी हो रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि होटलों का गंदा पानी खड्ड के रास्ते यमुना तक पहुंच रहा है, जो जनस्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए बड़ा खतरा है।उन्होंने विद्यालय परिसर से सीवरेज लाइन तत्काल हटाने, रिसाव रोकने और जिम्मेदार होटल संचालकों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। प्रधानाचार्य सुमन राणा ने बताया कि होटल संचालकों को कई बार लाइन हटाने के लिए कहा गया और उच्च अधिकारियों को भी अवगत कराया गया लेकिन समाधान नहीं हुआ।

सऊदी अरब में फंसे इंद्रमणि की मदद करेगा लंबगांव व्यापार मंडल

नई टिहरी(आरएनएस)। आठ सालों से सऊदी अरब में फंसे उत्तरकाशी जिले में डुंडा ब्लॉक के गोरसाड़ा गांव निवासी इंद्रमणि नौटियाल की मदद करने के लिए लंबगांव व्यापार मंडल आगे आया है। व्यापारियों ने पीड़ित परिवार को आर्थिक मदद देने का निर्णय लिया है। पीड़ित परिवार को मदद देने के लिए बुलाई गई बैठक में व्यापारियों ने पीड़ित परिवार को सहयोग देने का भरोसा दिया। बताया गया कि इंद्रमणि नौटियाल आठ साल पहले रोजगार के लिए सऊदी अरब गए थे। वहां इंद्रमणि एक ट्रक चालक के रूप में कार्य कर रहा था। इस दौरान उनका ट्रक दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिसमें पांच लोगों की मौत हो गई थी जबकि एक व्यक्ति घायल हो गया था। संबंधित वाहन का बीमा नहीं होने के कारण मामला न्यायालय में पहुंचा। न्यायालय के निर्णय के अनुसार उनकी रिहाई के लिए लगभग नौ लाख सऊदी रियाल की धनराशि जमा करनी होगी लेकिन इंद्रमणि जमा नहीं कर पाए हैं। कुछ दिनों पहले ही उनकी बेटी दीपिका ने सोशल मीडिया के माध्यम से अपने पिता की रिहाई के लिए आर्थिक मदद की अपील की है। उसके बाद लंबगांव व्यापार मंडल ने मदद का बीड़ा उठाया है। व्यापार मंडल अध्यक्ष राजीव पंवार और कविराज बगियाल ने कहा कि शासन-प्रशासन से उन्हें कोई मदद नहीं मिल रही है। व्यापार मंडल धनराशि एकत्रित कर शीघ्र ही पीड़ित परिवार को सौंपेगा।

सू- दोकू क्र.008

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.07 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

मेडिकल कॉलेज फिपल्टी ले जाने के विरोध में उतरे विभिन्न संगठन

नई टिहरी(आरएनएस)। टिहरी के भागीरथी पुरम से सटे इणिया में प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज को नरेंद्रनगर के फिपल्टी ले जाने के विरोध में विभिन्न संगठनों ने रैली निकालकर कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन कर धरना दिया। वक्ताओं ने कहा कि विरोध के बाद भी मेडिकल कॉलेज को अन्यत्र ले जाया गया तो उग्र आंदोलन होगा। उन्होंने मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री को ज्ञापन भेजा।

टिहरी मेडिकल कॉलेज निर्माण संयुक्त संघर्ष समिति के बैनर तले विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक और छात्र संगठनों के साथ क्षेत्र जनता ने सुमन पार्क से डाइजर होते हुए कलेक्ट्रेट तक रैली निकाली। संघर्ष समिति के अध्यक्ष डॉ. राकेश भूषण गोदियाल ने कहा कि इणिया में प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज को लेकर दो-दो मुख्यमंत्री ने घोषणा कर चुके हैं। प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री सुबोध उनियाल उसे अन्यत्र ले जाकर जनता की उपेक्षा कर रहे हैं।पालिकाध्यक्ष मोहन सिंह रावत ने कहा कि सरकार टिहरी और नरेंद्रनगर विधानसभा की जनता को आपस में लड़ाने का काम रही है। बेहतर होता कि सरकार दोनों जगहों के लिए मेडिकल कॉलेज स्वीकृत करवाती। डॉ. प्रीति पोखरियाल ने कहा कि टिहरी की जनता ने टिहरी बांध के कारण बहुत कुछ खोया है। सुविधाओं के अभाव में लोग नई टिहरी से पलायन कर रहे हैं।

मेडिकल कॉलेज का निर्माण जिला मुख्यालय में ही होना चाहिए।कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता शांति प्रसाद भट्ट ने कहा कि मेडिकल कॉलेज के नाम भाजपा विधायक और स्वास्थ्य मंत्री जनता को गुमराह कर रहे हैं। सरकार प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज का शासनादेश जारी कर जिला मुख्यालय में निर्माण कार्य शुरू करें। भाजपा एनजीओ प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक सुशील बहुगुणा ने सीएम से जिला चिकित्सालय बौराड़ी के आसपास पास मेडिकल की स्थापना की मांग उठाई।प्रदर्शनकारियों में संघर्ष समिति के सह संयोजक भगवान सिंह रावत, सुंदरलाल उनियाल, महिपाल नेगी, शिवराज सजवाण, मान सिंह रौतेला, संदीप रावत, दर्शनी रावत, गंगाभक्त नेगी, देवेंद्र नौडियाल, कुलदीप पंवार, दिव्यांशु रावत, सीपी डबराल शामिल थे।

प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज को अन्यत्र ले जाने के विरोध तथा पूर्व से प्रस्तावित कार्यक्रम के मुताबिक नई टिहरी और बौराड़ी बाजार पूरी तरह से बंद रहे हैं। दोपहर बाद मेडिकल, दूध, सब्जी, चाय आदि की दुकानें खुलने के बाद लोगों ने राहत की सांस ली। अन्य प्रतिष्ठान दिनभर बंद रहे।

जिला मुख्यालय में रह रहे किन्नर समाज के लोगों ने रैली में प्रतिभाग कर अपना समर्थन दिया। किन्नर नेहा रावत, अनुज शर्मा, कंगना, सरिता, सपना, भूरिया शर्मा ने कहा कि वह भी चाहते हैं, कि मेडिकल कॉलेज का निर्माण जिला मुख्यालय के आसपास हो। ताकि टिहरी के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य और उच्च शिक्षा की सुविधा मिले।

विद्यार्थी परिषद की नगर व कालेज कार्यकारिणी घोषित

रुद्रपुर(आरएनएस)। खटीमा ब्लाक सभागार में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की बैठक हुई। इसमें खटीमा इकाई की नगर कार्यकारिणी व कॉलेज कार्यकारिणी की घोषणा की गई। बैठक में विभाग संगठन मंत्री कैलाश, प्रांत प्रतियोगी परीक्षा के कार्य संयोजक नीरज सिंह धामी, जिला संयोजक अमित बोरा व विभाग छात्रा प्रमुख वंशिका मौजूद थीं।

विभाग संगठन मंत्री के अनुसार, होशियार पुजारी को नगर अध्यक्ष, नवनीत राणा को नगर मंत्री, शुभम भट्ट को तहसील संयोजक, घनश्याम राणा सह संयोजक, नवल अथानी, आलोक सिंह, विक्की गुप्ता व खुशी नेगी नगर सहमंत्री, हर्ष चौसाली नगर सोशल मीडिया संयोजक, गौरव सिंह सह संयोजक, प्रदीप सांमत स्टूडेंट ऑफ डेप्लपमेंट के नगर संयोजक, मनीष राणा व पूजा बम सह संयोजक, मनदीप सिंह एसएफएस के नगर संयोजक, उत्कर्ष पवार सह संयोजक नियुक्त किए गए।

वहीं रोहित चंद नगर खेलो भारत संयोजक, अलीशा मलारा व हिमांशु धामी सह संयोजक, हिमालय राणा नगर मीडिया संयोजक, सचिन खाती सह संयोजक, निशांत राणा नगर जनजाति संयोजक, आदित्य राणा व नीतीश राणा सह संयोजक बनाए गए।

सहायक अभियंता से अभद्रता पर रोष, कार्रवाई न होने पर आंदोलन को चेताया

हल्द्वानी (आरएनएस)। उत्तराखंड डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ (लोक निर्माण विभाग) की कार्यकारिणी की पहली बैठक बद्रीपुरा स्थित संघ भवन में संपन्न हुई। जनपद अध्यक्ष अभियंता प्रवीण कुमार की अध्यक्षता और सचिव अभय बालियान के संचालन में हुई इस बैठक में जिलेभर से पहुंचे अधिकारियों ने विभागीय समस्याओं और महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से मंथन किया।

बैठक के दौरान पीएमजीएसवाई खंड लोक निर्माण विभाग में कार्यरत सहायक अभियंता नरेश उपाध्याय के साथ ओखलकांडा के प्रमुख द्वारा कार्यस्थल पर की गई अभद्रता का मामला प्रमुखता से छाया रहा। सदस्यों ने इस घटना पर तीव्र आक्रोश व्यक्त करते हुए इसे बेहद अमर्यादित करार दिया।संघ ने चेतावनी दी है कि यदि दोषियों के खिलाफ अविलंब दंडात्मक कार्रवाई नहीं की गई, तो डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ उग्र आंदोलन करने के लिए विवश होगा। इसके साथ ही बैठक में ईपीसी मोड के अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्यों में कनिष्ठ एवं अपर सहायक अभियंताओं का सीधा नियंत्रण न होने का विषय भी उठाया गया।

सदस्यों ने रोष प्रकट किया कि बिना सीधा नियंत्रण के भी कार्यों में गुणवत्ता की कमी आने पर सारा ठीकरा डिप्लोमा इंजीनियरों पर फोड़ा जाता है, जिससे उनकी सामाजिक छवि धूमिल होती है। संघ ने इस व्यवस्था में सुधार के लिए एक स्पष्ट नीति बनाए जाने की जोरदार मांग की।

वहीं, पीएमजीएसवाई काठगोदाम के सदस्यों ने अपने कार्यक्षेत्र को दुर्गम श्रेणी में रखने की मांग रखी। उनका तर्क था कि उनका कार्यक्षेत्र धारी और नैनीताल खंड के अधीन विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले ब्लॉकों में आता है, जिन्हें हाल ही में प्रमुख अभियंता द्वारा दुर्गम घोषित किया गया है, इसलिए काठगोदाम खंड को भी दुर्गम श्रेणी में शामिल किया जाना न्यायसंगत होगा।

इस बैठक में प्रांतीय सचिव राजेन्द्र गिरि, मंत्री प्रोन्नत मनोज महतोलिया, महासंघ पदाधिकारी सुरेश डंगवाल, महिला उपाध्यक्ष ममता गोस्वामी सहित बड़ी संख्या में संघ के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

डीएम अध्यक्षता में हुई शिक्षा विभाग के समग्र कार्यों की समीक्षा बैठक

चम्पावत(आरएनएस)। डीएम मनीष कुमार की अध्यक्षता में कलक्ट्रेट सभागार में शिक्षा विभाग के समग्र कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनपद के विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं, पीएम पोषण योजना, समग्र शिक्षा अभियान, पेयजल, बाउंड्री वॉल, शौचालय, विद्युत व्यवस्था, मिड-डे मील तथा आपदा से प्रभावित विद्यालयों के निर्माण एवं मरम्मत कार्यों की विस्तार से समीक्षा की गई। डीएम ने कहा कि प्रत्येक छात्र-छात्रा को सुरक्षित, स्वच्छ एवं बेहतर शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने निर्देश दिए कि जिन विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव है, वहां संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित करें।उन्होंने कहा कि विद्यालयों में किसी भी प्रकार की मूलभूत सुविधा की कमी नहीं रहनी चाहिए। खंड शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया कि जल संस्थान एवं जल निगम के साथ समन्वय स्थापित कर पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित कराएं। आपदा से क्षतिग्रस्त विद्यालय भवनों के लिए शीघ्र प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजने तथा स्वीकृत कार्यों में तेजी लाने के भी निर्देश दिए। मुख्य शिक्षाधिकारी मान सिंह ने बताया कि जनपद में कुल 764 विद्यालय संचालित हैं, जिनमें 644 शासकीय, 109 निजी तथा 11 अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय शामिल हैं। इसके अतिरिक्त जनपद में चार केंद्रीय विद्यालय, एक जवाहर नवोदय विद्यालय एवं एक राजीव नवोदय विद्यालय संचालित हैं। बैठक में खंड शिक्षा अधिकारी भरत जोशी, जिला पूर्ति अधिकारी प्रियंका भट्ट, खंड शिक्षा अधिकारी पाटी संजय भट्ट, बाराकोट कमल भट्ट, अधिशासी अभियंता आरडब्ल्यूडी सुनील दत्ताल, अधिशासी अभियंता जल संस्थान आरपी. डोभाल सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कार्मिक उपस्थित रहे।

नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं का दीक्षारम्भ कार्यक्रम आयोजित

ऊधम सिंह नगर (प्र)। राजकीय महाविद्यालय, किच्छा, ऊधम सिंह नगर में सत्र 2026-27 के तहत बी0ए0 प्रथम सेमेस्टर में नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं का दीक्षारम्भ कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के अभिप्रेरणा कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.राजीव रतन ने किया। प्राचार्य ने सभी नवप्रवेशित छात्र-छात्राओं को अभिप्रेरित करते हुए कहा कि नयी शिक्षा नीति विधार्थी को विषय के ज्ञान के साथ -साथ जीवन में आगे बढ़ने का कौशल प्रदान करता है। आपने विद्यार्थियों को कक्षाओं में उपस्थिति के मानकों से परिचित कराया । महाविद्यालय के मुख्य शास्ता एवं छात्र संघ प्रभारी डॉ.राजेश कुमार सिंह ने महाविद्यालय के सामान्य संचालन से जुड़े अनुशासन के नियमों से विद्यार्थियों को परिचित कराया । आपने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे महाविद्यालय में समय से उपस्थित होकर अनुशासन का पालन करते हुए अपनी कक्षाओं में जाएं । महाविद्यालय में निर्धारित यूनिफॉर्म में रहें और अपना परिचय पत्र हमेशा अपने पास रखें । आपने विद्यार्थियों को सरकार द्वारा उपलब्ध विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं और उनकी प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय में इतिहास विभाग प्रभारी डॉ हर्षिता तिवारी ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों के समक्ष महाविद्यालय के संचालन की समेकित रुपरेखा प्रस्तुत की। कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल के शैक्षणिक कैलेंडर के अनुपालन में राजकीय महाविद्यालय, किच्छा में प्रथम सेमेस्टर की कक्षाएं दीक्षारंभ कार्यक्रम के साथ प्रारम्भ हो चुकी हैं। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षकों सहित कुल 51 छात्र-छात्राओं ने भागीदारी की।

कागजों में 'सेवक' और मंचों पर 'महाराज' ◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

कार्यक्रमों का केंद्र जनता बन जाए, तो लोकतंत्र की भावना और मजबूत होगी। आखिर लोकतंत्र में सबसे बड़ा वीआईपी कौन होना चाहिए मंत्री या मतदाता?

मेघालय सरकार का फैसला केवल माला हटाने का आदेश नहीं है, बल्कि शासन की प्राथमिकताओं को बदलने का प्रयास है। यदि उत्तराखंड भी इस माडल को अपनाता है, तो सरकारी कार्यक्रमों की संस्कृति में बड़ा बदलाव आ सकता है। नेताओं के स्वागत की जगह यदि किसी सीमांत गांव की महिला, किसी सरकारी स्कूल के मेधावी छात्र, किसी सैनिक की शहादत देने वाले परिवार, किसी नवाचारी किसान या आपदा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्वयंसेवक का सम्मान हो, तो लोकतंत्र की असली तस्वीर सामने आएगी। सवाल अब यही हैकृक्या उत्तराखंड भी वीआईपी संस्कृति से आगे बढ़कर जनता ही सबसे बड़ा सम्मान का संदेश देने का साहस दिखाएगा, या फिर सरकारी मंचों पर फूल-मालाओं और औपचारिक अभिनंदन की परंपरा पहले की तरह जारी रहेगी?

सेवा के मंच पर वोटों की 'फील्डिंग' ◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

का विषय बन सकते हैं। भाजपा इस पूरे मामले को अलग नजरिये से देख सकती है। पार्टी का पक्ष यह हो सकता है कि लोकतंत्र में किसी भी सामाजिक संस्था को किसी भी राजनीतिक दल से संवाद करने का अधिकार है। यदि कोई संस्था समाज के विकास, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण या जनकल्याण के मुद्दों पर सरकार और राजनीतिक दलों से समन्वय करती है, तो इसमें कोई असामान्य बात नहीं है। पार्टी यह भी कह सकती है कि सम्मेलन का उद्देश्य सामाजिक संस्थाओं के अनुभवों को जोड़ना और विकास कार्यों में उनकी भागीदारी बढ़ाना था, न कि उन्हें राजनीतिक रूप से संबद्ध करना।

भारत में स्वयंसेवी संस्थाओं की पहचान उनकी निष्पक्षता और जनसेवा से बनती है। यदि किसी संस्था पर किसी दल विशेष के निकट होने की धारणा बनती है, तो उसके कामकाज पर भी सवाल उठ सकते हैं। इसीलिए विशेषज्ञ मानते हैं कि सामाजिक संस्थाओं और राजनीतिक दलों के बीच संवाद हो सकता है, लेकिन उसकी प्रवृति पारदर्शी और स्पष्ट होनी चाहिए। लोकतंत्र में नागरिक समाज की स्वतंत्र भूमिका को बनाए रखना उतना ही आवश्यक है, जितना राजनीतिक दलों का सामाजिक संवाद। भाजपा पहले से बूथ स्तर तक मजबूत संगठन होने का दावा करती है। अब यदि वह समाज के विभिन्न वर्गों के साथ भी अपने रिश्ते मजबूत करती है, तो उसका चुनावी आधार और व्यापक हो सकता है। दूसरी ओर, कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के सामने चुनौती होगी कि वह भी सामाजिक संगठनों और नागरिक समाज के बीच अपनी उपस्थिति मजबूत करें। यानी आने वाले महीनों में केवल राजनीतिक रैलियां ही नहीं, बल्कि सामाजिक मंच भी चुनावी गतिविधियों का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि क्या यह सम्मेलन केवल सामाजिक समन्वय का प्रयास था? या फिर 2027 विधानसभा चुनाव से पहले सामाजिक प्रभाव रखने वाले संगठनों के माध्यम से राजनीतिक पहुंच बढ़ाने की रणनीति? इसका स्पष्ट उत्तर अभी किसी के पास नहीं है। लेकिन इतना तय है कि उत्तराखंड की चुनावी राजनीति अब बूथ, मंडल और जिलों से आगे बढ़कर समाज के प्रभावशाली नेटवर्क तक पहुंच चुकी है।

यूकेडी का 70 सीटों पर दांव

◆भाजपा और कांग्रेस के सियासी गणित में पड़ सकती है नई दरार
◆यूकेडी की घोषणा से विस चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबले के संकेत
◆पहाड़ की राजनीति में फिर उठी क्षेत्रीय अस्मिता की दमदार आवाज

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति लंबे समय से भाजपा और कांग्रेस के इर्द-गिर्द घूमती रही है। लेकिन अब उत्तराखंड क्रांति दल ने आगामी विधानसभा चुनाव में सभी 70 सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर सियासी समीकरणों को नई दिशा देने की कोशिश की है। यह घोषणा ऐसे समय आई है जब भाजपा सत्ता बचाने और कांग्रेस सत्ता में वापसी की रणनीति बनाने में जुटी है। ऐसे में यूकेडी का मैदान में पूरी ताकत के साथ उतरना दोनों राष्ट्रीय दलों के लिए नई चुनौती बन सकता है। हालांकि सवाल यह भी है कि क्या यूकेडी सिर्फ चुनावी उपस्थिति दर्ज कराएगी या वास्तव में भाजपा और कांग्रेस के वोट बैंक में सेंध लगाकर मुकाबले को त्रिकोणीय बना देगी? उत्तराखंड राज्य आंदोलन की अगुआ रही यूकेडी वर्षों से अपने खोए जनाधार को वापस पाने की कोशिश कर रही है। अलग राज्य बनने के बाद जिस दल ने राज्य निर्माण का सपना दिखाया, वही धीरे-धीरे राजनीतिक हाशिये पर पहुंच गया। अब पार्टी एक बार फिर मूल निवास, भू-कानून, रोजगार, पलायन, जल-जंगल-जमीन और पहाड़ की पहचान जैसे मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाने की तैयारी कर रही है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि यूकेडी इन मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाने में सफल रहती है, तो वह उन मतदाताओं को आकर्षित कर सकती है जो भाजपा और कांग्रेस दोनों से निराश हैं। उत्तराखंड में कई विधानसभा सीटें ऐसी हैं जहां जीत-हार का अंतर दो से पांच हजार वोटों के भीतर रहा है। यदि यूकेडी इन सीटों पर कुछ हजार वोट भी हासिल कर लेती है, तो कई सीटों का परिणाम बदल सकता है। विशेषकर पर्वतीय जिलों पौड़ी, टिहरी, चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़, बागेश्वर, अल्मोड़ा और रुद्रप्रयाग में क्षेत्रीय मुद्दों का असर अधिक माना जाता है। यहां यूकेडी की सक्रियता भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए परेशानी का कारण बन सकती है। भाजपा फिलहाल सरकार में है और स्वाभाविक रूप से सत्ता विरोधी माहौल का सामना भी कर रही है। यदि यूकेडी भू-कानून, मूल निवास, स्थानीय युवाओं को रोजगार, पलायन और पहाड़ की उपेक्षा जैसे मुद्दों पर जनसमर्थन जुटाती है, तो उसका असर भाजपा के पारंपरिक वोट बैंक पर भी पड़ सकता है। हालांकि भाजपा संगठनात्मक रूप से मजबूत है और उसके पास बूथ स्तर तक मजबूत नेटवर्क है, लेकिन छोटे अंतर वाली सीटों पर यूकेडी का प्रभाव निर्णायक हो सकता है।

कांग्रेस सत्ता विरोधी लहर का लाभ उठाने की उम्मीद कर रही है। लेकिन यदि भाजपा विरोधी वोट यूकेडी की ओर खिसकते हैं, तो कांग्रेस की संभावित बढ़त कमजोर पड़ सकती है। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह मतदाताओं को यह भरोसा दिलाए कि भाजपा को हराने की वास्तविक लड़ाई उसी के हाथ में है। यदि विपक्षी वोट बंटे, तो इसका सीधा फायदा भाजपा को मिल सकता है।

उत्तराखंड के शुरुआती चुनावों में यूकेडी का प्रभाव साफ दिखाई देता था। कई बार उसने सत्ता गठन के समीकरणों को प्रभावित किया। बाद के वर्षों में संगठन कमजोर हुआ, नेतृत्व बिखरा और जनाधार सिमटता गया। अब यदि पार्टी सभी 70 सीटों पर मजबूत उम्मीदवार उतारने, संगठन खड़ा करने और प्रभावी चुनाव अभियान चलाने में सफल होती है, तो वह भले सत्ता तक न पहुंचे, लेकिन कई सीटों पर किंगमेकर की भूमिका निभा सकती है। घोषणा करना और उसे जमीन पर उतारना, दोनों अलग बातें हैं। यूकेडी के सामने कई बड़ी चुनौतियां हैं कि हर सीट पर मजबूत उम्मीदवार खोजना, चुनावी संसाधनों का प्रबंधन, बूथ स्तर तक संगठन खड़ा करना, युवा मतदाताओं के बीच प्रभाव बनाना, गुटबाजी से बचना और क्षेत्रीय मुद्दों को चुनावी एजेंडा बनाना। यदि पार्टी इन चुनौतियों से पार नहीं पाती, तो 70 सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा केवल प्रतीकात्मक बनकर रह सकती है।

उत्तराखंड की राजनीति अब केवल भाजपा बनाम कांग्रेस तक सीमित नहीं दिखाई दे रही। यूकेडी के इस फैसले ने चुनावी बहस में तीसरे विकल्प की संभावना को फिर जीवित कर दिया है। यदि क्षेत्रीय अस्मिता, भू-कानून और स्थानीय अधिकारों का मुद्दा चुनाव के केंद्र में आता है, तो यूकेडी राजनीतिक चर्चा का बड़ा केंद्र बन सकती है। वहीं यदि चुनाव राष्ट्रीय नेतृत्व, संगठन और संसाधनों के दम पर लड़ा गया, तो भाजपा और कांग्रेस की सीधी टक्कर ही प्रमुख रहेगी। यूकेडी का 70 सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान केवल एक चुनावी घोषणा नहीं, बल्कि यह संदेश भी है कि उत्तराखंड की राजनीति में क्षेत्रीय दल अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं। अब नजर इस बात पर होगी कि क्या यूकेडी अपनी इस घोषणा को मजबूत संगठन, प्रभावी उम्मीदवारों और जनसमर्थन में बदल पाती है या फिर यह भी चुनावी मौसम की एक और राजनीतिक घोषणा बनकर रह जाएगी।

2027 के विधानसभा चुनाव की तस्वीर अभी पूरी तरह साफ नहीं है, लेकिन इतना तय है कि यूकेडी की इस घोषणा ने राजनीतिक दलों की रणनीति बदलने पर मजबूर कर दिया है। भाजपा को अपने वोट बैंक की रक्षा करनी होगी, कांग्रेस को विपक्षी मतों के बिखराव से बचना होगा और यूकेडी को यह साबित करना होगा कि वह केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि उत्तराखंड की राजनीति का भविष्य भी बन सकती है। यदि ऐसा हुआ, तो इस बार चुनावी मुकाबला सिर्फ सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि राज्य की क्षेत्रीय राजनीति के पुनर्जागरण का भी हो सकता है।

बीएलओ (आंगनवाड़ी वर्कर) की मौत/आत्महत्या का जिम्मेदार कौनः मोर्चा

संवाददाता

देहरादून। जन संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष रघुनाथ सिंह नेगी ने कहा कि बीएलओ की आत्महत्या किन परिस्थितियों में की गई, इसको समझने एवं विचार करने की जरूरत है कि इसका जिम्मेदार कौन है।

आज यहां जन संघर्ष अध्यक्ष रघुनाथ सिंह नेगी ने पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि कल बागेश्वर के कांडा क्षेत्र के बांसतौली गांव की एक बीएलओ/आंगनवाड़ी वर्कर ने सरकार द्वारा जबरन थोपे गए एसआईआर व अन्य काम के बोझ के चलते आत्महत्या कर ली गई, इससे समझा जा सकता है कि प्रदेश भर की बीएलओ कितने मानसिक दबाव में कार्य कर रही हैं। आत्महत्या किन परिस्थितियों में की गई, इसको समझने एवं विचार करने की जरूरत है। कई बीएलओ न जाने कितने दबाव व किन

परिस्थितियों में काम कर रहे हैं, यह तो सिर्फ वही जान सकते हैं। एसआईआर जैसे जटिल काम की जिम्मेदारी बीएलओ अपने पूरे परिवार के सहयोग से निपटाने में लगा है यानी पूरा परिवार इस काम में झोंक रखा है। सरकार द्वारा एक साथ दोहरी जिम्मेदारी देकर इनके साथ बहुत बड़ी नाइंसाफी कर रखी है। सावल यह उठता है कि आखिर इतने कम मानदेय में ये आंगनवाड़ी वर्कर्स अपने परिवार का भरण- पोषण कैसे करें। क्यों इनके मामले में सरकार उसके मंत्री व अधिकारी संवेदनशील नहीं है। नेगी ने कहा कि भ्रष्ट एवं गैर जिम्मेदार मंत्री की वजह से इनको सड़े- गले अंडे, घटिया क्वालिटी के सेनेटरी नैपकिन पैड, घटिया पोषाहार वितरण करने की जिम्मेदारी भी है, जो जबरन लाभार्थियों को विचलित करनी पड़ती है। मंत्री की कमीशन खोरी वाले सेनेटरी पैड बिक नहीं रहे हैं और उसका पैसा भी इन वर्कर्स को अपनी जेब से भरना पड़ता है। सरकार को संवेदनशीलता के साथ इनके कार्य/ जिम्मेदारियां को देखते हुए इनकी सुख- सुविधाओं व मानदेय आदि मामलों का भी संज्ञान लेना चाहिए। पत्रकार वार्ता में- विजय राम शर्मा व हाजी असद मौजूद रहे।

कांवली रोड की बदहालीः गड्ढे, सीवरेज क्षतिग्रस्त, जाम लगने से लोग परेशान

संवाददाता

देहरादून। कांवली रोड की बदहाली, गढडे सीवरेज क्षतिग्रस्त से जाम से यात्री परेशान हो रहे हैं।

कांवली रोड की हालात दिन-ब-दिन बद से बदतर होती जा रही है। एक ओर जगह-जगह गहरे गड्ढे हैं तो दूसरी ओर जलसंस्थान की लापरवाही के कारण सीवरेज लाइन क्षतिग्रस्त हो गई है, जिससे गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है। यात्री बेहाल हैं, वाहनों को नुकसान हो रहा है, और सहारनपुर चौक से बल्लीवाला चौक तक जाम की स्थिति आम हो गई है। खबरों के अनुसार, मेयर सौरभ थपलियाल ने कांवली रोड की समस्या का संज्ञान तो लिया है, अब व्यवस्था सुधरने की उम्मीद नजर आ रही है।

लोक निर्माण विभाग निर्माण खण्ड (पीडब्ल्यूडी) को जिलाधिकारी के आदेशों के बावजूद सड़कों की मरम्मत ठीक ढंग से नहीं हो पाई है जिससे सडक बार बार उखड रही है, स्थिति यह है कि डीएम को कई बार विभिन्न संगठनों द्वारा ज्ञापन दिए जा चुके हैं, लेकिन धरातल स्थल विभाग व कार्यदायी संस्था लापरवाही कर रही है तथा बर्षात का बहाना बनाया जा रहा, कार्य ठीक ढंग से मोनटरिंग नहीं हुई। क्षतिग्रस्त सीवरेज लाइन के कारण सड़कों पर गंदा पानी बह रहा है, जिससे न केवल बदबू फैल रही है बल्कि बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि यह समस्या महीनों से चली आ रही है और किसी ने इसकी ओर जलसंस्थान ध्यान नहीं दे रहा है। स्थानीय विधायक और जनप्रतिनिधि इस गंभीर समस्या के प्रति पूरी तरह मौन हैं। क्षेत्रवासियों ने मांग की है कि सम्मानित पत्रकार कांवली रोड का मुआयना करें और इस बदहाली को उजागर करें। यात्रियों, दुकानदारों, विक्रम, मैक्सी, रिक्शा और निजी वाहन चालकों को रोजाना इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है तथा वाहन निरन्तर क्षतिग्रस्त हो रहे है। यातायात व्यवस्था ठीक न होने के कारण सहारनपुर चौक से बल्लीवाला चौक तक लगातार जाम की स्थिति बनी रहती है। एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले साल झंडा मेले के दौरान रूट डायवर्जन के कारण कांवली रोड सहित आसपास के इलाकों में भारी जाम की स्थिति पैदा हो गई थी। स्थानीय निवासियों का कहना है कि आम दिनों में भी यहां जाम लगा रहता है!अनन्त आकाश, सचिव सीपीआई (एम) ने इस बदहाली को गंभीरता से उठाते हुए मांग की है कि प्रशासन तुरंत क्षतिग्रस्त सीवरेज लाइन की मरम्मत कराए, सड़कों पर बने गड्ढों को भरवाया जाए, यातायात व्यवस्था को सुचारु किया जाए, जनप्रतिनिधि इस समस्या पर संज्ञान लें और ठोस कार्रवाई करें। कांवली रोड के निवासियों ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द ही समस्या का समाधान नहीं किया गया तो वे बड़ा आंदोलन करेंगे।

मंदिरों को निशाना बनाने वाला चोर गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

पिथौरागढ़। विभिन्न मंदिरों में लगातार हो रही चोरी की घटनाओं का सफल खुलासा करते हुए पुलिस ने एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी के कब्जे से चोरी की रकम के साथ-साथ 213.7 ग्राम अवैध चरस भी बरामद हुई है।

जानकारी के अनुसार क्षेत्र के कई मंदिरों में चोरी की घटनाओं की सूचना मिलने पर कोतवाली पिथौरागढ़ में अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस द्वारा त्वरित जांच शुरू कर दी गयी। जांच के दौरान पुलिस ने एक सूचना के आधार पर सन्तेष धामी उर्फ सन्नी धामी (21 वर्ष) पुत्र निवासी ग्राम गलाती, धारचूला, जनपद पिथौरागढ़ को गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपी ने स्वीकार किया कि उसने बीती 31 मई की रात्रि ग्राम पौण स्थित चण्डिका मंदिर का ताला तोड़कर दानपात्र से नकदी चोरी की थी। आरोपी के कब्जे से चोरी की 1900 रूपये नगद राशि भी बरामद की गई। गरफ्तारी के दौरान की गई तलाशी में आरोपी के पास से 213.7 ग्राम अवैध चरस (पन्नी सहित) भी बरामद हुई, जिसके संबंध में अभियुक्त के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत अलग से अभियोग पंजीकृत किया गया है। जांच में यह भी प्रकाश में आया है कि आरोपी की संलिप्तता भदेलवाड़ा मंदिर, पुनेड़ी मंदिर एवं लिन्ठ्यूड़ा मंदिर में हुई चोरी की घटनाओं में भी रही है।

बाइक फिसलने से युवक की मौत

हमारे संवाददाता

देहरादून। सड़क दुर्घटना में बीते रोज एक बाइक के अनियंत्रित होकर फिसल जाने से एक युवक की मौत हो गयी। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्यवाही शुरू कर दी है।

सड़क दुर्घटना का यह मामला मसूरी-कीमाड़ी मार्ग का है। यहां हाथीपांव से करीब तीन किलोमीटर आगे झरने के पास रविवार को एक बाइक अनियंत्रित होकर फिसल गई, जिससे बाइक सवार युवक की मौत हो गई। घटना के बाद स्थानीय लोगों और नियमित रूप से इस मार्ग का उपयोग करने वाले वाहन चालकों ने सड़क की बदहाल स्थिति पर नाराजगी जताई है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, सिटी कंट्रोल 112 के माध्यम से दुर्घटना की सूचना मिलने पर कोतवाली मसूरी पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। गंभीर रूप से घायल युवक को 108 एंबुलेंस की सहायता से सिविल अस्पताल मसूरी पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक युवक के परिजनों को घटना की सूचना दे दी है और शव को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी में रखवाया गया है। मामले में आगे की वैधानिक कार्रवाई की जा रही है। पुलिस के अनुसार,दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अभिजीत दिपके ने फिर धरने पर बैठने की चेतावनी दी!

संवाददाता

नई दिल्ली। नीट-यूजी पेपर लीक मामले को लेकर श्कॉकरोच जनता पार्टीश (सीजेपी) और सरकार के बीच तकरार एक बार फिर बढ़ गई है। सीजेपी के संस्थापक अभिजीत दिपके ने सोमवार को केंद्र सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगाते हुए एक बार फिर से धरने पर बैठने की सख्त चेतावनी दी है। अभिजीत दिपके ने कहा कि नीट पेपर लीक संकट के चलते कथित तौर पर आत्महत्या करने वाले पीड़ित छात्रों के परिवारों को सरकार ने अब तक घ करोड़ की मुआवजा राशि नहीं दी है। किसी भी प्रभावित परिवार को अभी तक कोई आर्थिक मदद नहीं मिली है। दिपके ने सरकार पर तीखा तंज कसते हुए कहा, मुझे पता चला है कि सरकार कह रही है कि इसके लिए उन्हें नियमों और मानदंडों को देखना होगा। जब आपको सांसद या विधायक खरीदने होते हैं, तब आप करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं, लेकिन गरीब पीड़ित परिवारों को मुआवजा देने के लिए आपको पहले नियमों की जांच करनी पड़ती है। इसका सीधा मतलब है कि सरकार की नीयत ही सही नहीं है।

अभिजीत दिपके ने साफ किया है कि सीजेपी छात्रों के अधिकारों के साथ कोई समझौता नहीं करेगी। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर सरकार द्वारा सहमति जताई गई मांगों को जल्द से जल्द पूरा नहीं किया जाता और मुआवजे की राशि जारी नहीं की जाती, तो छात्रों को मजबूरन एक बार फिर सड़कों पर उतरकर बड़े पैमाने पर धरना प्रदर्शन शुरू करना पड़ेगा।

विधानसभा उपचुनावः बिहार के बांकीपुर सीट से प्रशांत किशोर लगातार आगे

संवाददाता

पटना। बांकीपुर (बिहार) के उपचुनाव की मतगणना जारी है। समाचार लिखे जाने तक ताजा रुझानों में जनसुराज के मुखिया प्रशांत किशोर आगे चल रहे हैं, भाजपा के नीरज कुमार सिन्हा दूसरे और राजद की उम्मीदवर रेखा कुमारी (गुप्ता) तीसरे नंबर पर हैं। फिलहाल जन सुराज भारतीय जनता पार्टी से 6,419 वोटों से आगे चल रही है। अभी 20 राउंड की मतगणना शेष है। हाल ही में हुए विधानसभा उपचुनावों बिहार का बांकीपुर हॉट-सीट बना रहा। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन के राज्यसभा जाने के बाद खाली हुई इस सीट पर केवल 34.31 प्रतिशत मतदान ने जहाँ एक तरफ भाजपा की चिंता बढा दी है वहीं, लोकतंत्र में शहरी वोटर्स की उदासीनता भी सवालों के दायरे में है। हालांकि जीत को लेकर सभी पक्षों के अपने दावे और वायदे हैं लेकिन एक नजर बांकीपुर के जातीय समीकरण और संभावनाओं पर डालते हैं।

पटना की प्रतिष्ठित बांकीपुर सीट देश भर में चर्चा का सबसे बड़ा केंद्र बनी हुई है। शुरुआत में यहां बीजेपी के नीरज सिन्हा, जन सुराज के प्रशांत किशोर और राजद की रेखा गुप्ता के बीच ट्रायंगुलर फाइट माना जा रहा था, लेकिन जमीनी प्रचार आगे बढ़ने के साथ यह लड़ाई सीधे तौर पर बीजेपी बनाम जन सुराज में बदल गई।

प्रशांत किशोर को जहाँ शहरी और पढे-लिखे मतदाताओं का भरोसा है वहीं बीजेपी सवर्ण, खासकर कायस्थ मतदाताओं, लव-कुश समीकरण और चंद्रवंशी समुदाय के वोटों पर उम्मीद लगाए बैठी है। राजनीतिक विश्लेषकों और मतदान के बाद प्रतिक्रियाओं के मुताबिक, बांकीपुर में इस बार पारंपरिक जातीय समीकरणों में दरार दिखी है।

बांकीपुर लंबे समय से बीजेपी का गढ़ रहा है। प्रशांत किशोर ने इस चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंककर राष्ट्रीय ध्यान अपनी ओर खींचा है, लेकिन शहरी कोर वोटबैंक पर बीजेपी की मजबूत पकड़ को देखते हुए इस सीट पर बीजेपी का पलड़ा अब भी भारी नजर आता है। संभावना और आशंकाओं का दौर अब बस कुछ ही देर है। आंकड़े ईवीएम में बंद हैं और अनुमान के आधार पर विश्लेषण किए जा रहे हैं। मतगणना जारी है और कुछ ही देर में पता चल जाएगा कि बांकीपुर में प्रशांत किशोर का दांव बीजेपी के मजबूत शहरी किले को भेद पाता है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, एडवोकेट
बैजनाथ, एडवोकेट

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।